नैषधे पदलालित्यम्

महाकवि श्रीहर्ष द्वारा रचित 'नैषधचरितम्' संस्कृत साहित्य जगत् में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। नैषधचरित महाकाव्य में महाकवि 'श्रीहर्ष' की विद्वता, पदवाक्यप्रमाणज्ञता और सहृदयता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। उनकी इसी विद्वता से प्रभावित होकर किसी ने ठीक ही कहा है "नैषधं विद्वदौषधम्"। श्रीहर्ष ने 'नैषधचरितम्' में कोई भी विषय ऐसा नहीं है जो गृहीत न किया है। इस काव्य में अनुप्रास यमकादि शब्दालंकारों के साथ-2 उपमारूपकादि अर्थालंकारों का भी प्रयोग किया है, तथा श्लेष के प्रयोग में महाकवि बहुत विशिष्ट हो जाते है। इन्होंने दमयन्ती स्वयंवर प्रकरण में कई ऐसे श्लोक रचे हैं जिनके नल तथा चार देवताओं परक पाँच-2 अर्थ निकलते हैं। यथा-

देवः पतिर्विदुषि ! नैषधराजगत्या, निर्णीयते न किमु न व्रियते भवत्या।
नायं नलः खलु तवातिमहानलाभो यद्येनमुज्झसि वरः कतरः पुनस्ते।

इसी प्रकार नैषधचरित में सभी रसों का समावेश है श्रृङ्गार रस के परिपाक के साथ-2 हास्य, वीर, करुणादि रस अङ्गरूप से हैं।

Scanned with CamScanner

किसी भी काव्य के परिचायक तत्वों में पदलालित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। पदलालित्य का अर्थ है 'पदगत सौन्दर्य'। आचार्य गोवर्धन आर्यासप्तशती में कहते हैं—

"अविदितगुणापि सत्कविभणितिः श्रवणेषु वमति मधुधाराम्
अनधिगतपरिमलापि हि हरति दृशं मालतीमाला ॥"

यदि काव्य में पदलालित्य न हो, तो भाव कितना भी सुन्दर क्यों न हो मन को अनायास आकृष्ट नहीं करता। सहज सरल ललित पद समूहों के प्रयोगों से ही काव्य में पदलालित्य आता है। मैथिलि के कवि गोविन्द दास की कृतियों में अतिरमणीय पदलालित्य है।

'नैषध चरितम्' महाकाव्य से पहले 'दण्डिनः पदलालित्यम्' यह आभाणक प्रसिद्ध था किन्तु जब आलोचकों ने नैषध को इस कसौटी पर कसा तो उन्होंने सहसा ही कहा 'नैषधे पदलालित्यम्'।
पदलालित्य को आचार्यों ने चार भागों में बांटा है-

1. शब्दालंकारमूलकम्
2. अर्थानुरूपपदविन्यासमूलक
3. समस्त भावों से अधिक पदों के ग्रन्थनात्मक गुम्फलमूलक
4. रसानुरूपपदसमावेशमूलक

'नैषधचरितम्' मे श्री हर्ष ने चारों प्रकार के पदलालित्य का प्रयोग बड़ी सिद्धहस्तता के साथ किया है।

1) शब्दालंकारमूलक →

इसका प्रयोग उन पद्यविशेषों में किया जाता है जिन्हें कवि अपेक्षित शब्दयोजना के लिए प्रयत्नशील होकर रचता है. जैसे —

"लोकेषु केशव शिवानपि यश्चकार श्रृंगारसान्तरभृशान्तर -शान्तभावान्।
पञ्चेन्द्रियाणि जगतामिषुपञ्चकेन संक्षोभयन् वितनुतां -वितनुर्मदं वः॥"

यहाँ यमक और अनुप्रास के समावेश पर ही यहाँ पद-लालित्य आधारित है। उक्त श्लोक में स्वयंवर में उपस्थित राजाओं को सम्बोधित करते हुए कामदेव की स्तुति की गई है।

दमयन्ती के सौन्दर्यवर्णनावसरे पर हंस कहता है-
'स्वर्गापगा-हेम-मृणालिनीनां नालामृणालाग्रभुजो भजामः।
अन्नानुरूपां तनुरूप ऋद्धिं कार्यं नादानद्धि गुणानधीतो।

इस पद्य में अनुप्रास स्वयमेव झंकृत होता हुआ सा प्रतीत होता है। किसी प्रसङ्ग में दमयन्ती की उक्ति में पदलालित्य के साथ-2 अर्थगौरव भी है —

"मनस्तु यं नोज्झति जातु यातु मनोरथः कण्ठपथं कथं सः।
का नाम बाला द्विजराजपाणिग्रहाभिलाषं कथयेदभिज्ञा॥"

अर्थानुरूपपदविन्यासमूलक →

पदानाम पदो के अर्थानुरूप पदविन्यास तभी संभावित होता है जब पदों में कवि का प्रबन्ध अधिकार हो। उसके अनुयायिशब्द अनायास ही स्वाभाविकरूपेण चमत्कार जनक अर्थों का अनुगमन करते हुए प्रस्फुटित होते हैं। इसी स्थिति में काव्य प्रसादगुणयुक्त होता है। यह ही प्रसादगुणसम्पन्नता काव्य का परम उत्तमगुण माना जाता है →

वृथार्पयन्तीमपथे पदं त्वां मरुल्ललत्पल्लवपाणिकल्पैः।
आलीव पश्य प्रतिषेधनीय कपोतहुंकारगिरा वनाली॥3॥

इस पद्य के पदलालित्य से प्रभावित होकर महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कहा – ~~"इसी प्रकार कि~~ – इस प्रकार के पद्य ~~बहुत~~ बहुत कम पाये जाते हैं"

③ समस्तभावों से अधिक पदों के ग्रन्थनात्मक गुम्फन मूलक →

इस प्रकार का पदलालित्य वहाँ होता है, जहाँ एक साथ ही बहुत से शब्द ग्रथित और गुम्फित होते हैं। वहाँ 'ओजः समास भूयस्त्वम्' इस नियम के द्वारा समासबाहुल्य के कारण काव्य ओजगुणयु-

होता है यथा –
आसीदासीमभूमीवलयमलयजालेनपनेपथ्यकीर्त्तिः,
सप्ताकूपारपारपारीसदन जघनोद्गति चापप्रतापः।
वीरादस्मात् परः कः पदयुगयुगपत्पातिभूपतिभूयः-
-श्चूडारत्नोडुपत्नीकरपरिचरणामन्दनन्दन्नखेन्दुः॥

4) रसानुरूप →
एवं प्रकारकं पदलालित्यं तत्र भवति, जहाँ काव्य में रसानुरूप पदों की योजना होती है, जैसे – "स्मरहुताशनदीपितया बहु मुहुः सरसं सरसीरुहम्।
श्रयितुमर्धपथे कृतमन्तरा श्वसितनिर्मितमर्मरमुज्झितम्॥
यहाँ कवि ने शृङ्गार रसानुरूप पदों की योजना होती है।
महाकवि श्रीहर्ष ने 'नैषधमहाकाव्य' में चारों प्रकार के पदलालित्य का प्रयोग किया है। किसी भी कवि के काव्य में दो या तीन प्रकार के ही पदलालि-त्य का प्रयोग किया है। पण्डितराज जगन्नाथ और भवभूति ने तृतीय पदलालित्य का प्रयोग किया है। कालिदास ने द्वितीय और चतुर्थ पदलालित्य का प्रयोग किया है। श्री हर्ष ने चारों ही ~~पदनि~~ पदलालित्यों का प्रयोग किया है। इस काव्य में –

Scanned with CamScanner

प्रसादगुणसम्पन्न पद्यों में श्रृंगारोपयुक्त पदलालित्य मिलता है, वहीं ओजगुणविशिष्ट रचनाओं में वीररसोचित पदलालित्य की न्यूनता है नहीं है, इसीलिए कहा जाता है —

"नैकमोजः प्रसादो वा रसभावविदः कविः"

अनुप्रासों के साथ श्लेष भी यहाँ है। व्याकरण-कोश और भाषाओं पूर्णाधिकार से श्रीहर्ष ने अपने काव्यों में श्लेष को पुष्ट किया। व्याकरणमाध्यम से श्लेष का उदाहरण →

"क्रियेत चेत्साधुर्विभक्तिचिन्ता, व्यक्तिस्तदा सा प्रथमाभिधेया।
या स्वौजसासाधयितुं विलासैस्तावत्क्षमा नामपदं बहु स्यात्॥"

यद्यपि अनुप्रासयमक के अनवरत अन्वेषण में उनके द्वारा कहीं भी दूरान्वयि-अर्थ का अवलम्बन किया है फिर भी —

"एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः।"

यह आभाणक 'नैषधे-पदलालित्य' इसकी लोकप्रसिद्धि मे अबाधक होते हुए भी साधक का ही कार्य करता है।